महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

फोन नं0 : 0551–6827552, 2105416
मो. : 9794299451
Website: www.mpmahavidyalaya.org
E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : ..... दिनांक : 19.01.2016

प्रकाशनार्थ

भारतीय अस्मिता और सौर्य के प्रतीक हिन्दुआ सूर्य महाराणा प्रताप का सम्पूर्ण जीवन युवाओं का मार्ग दर्शन करता रहेगा। महाराणा प्रताप राष्ट्र के प्रतीक है और उनका जीवन भारत की पहचान है। राष्ट्र–समाज के लिए त्याग–बलिदान के पर्याय है महाराणा प्रताप। भारतीय युवाओं में भारत की सुरक्षा और संरक्षा का संकल्प पैदा करने का माद्दा रखता है महाराणा प्रताप का जीवन दर्शन। स्वाभिमान, स्वावलम्बन, स्वधर्म के लिए सर्वस्व समर्पण का नाम है महाराणा प्रताप। भारत के नवजवानों में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, श्रीकृष्ण से लेकर महाराणा प्रताप और शिवाजी के जीवन चरित्र को शिक्षा के पाठ्यक्रमों में स्थान देने की महति जरूरत है। जब भी राष्ट्र पर संकट होगा राष्ट्र खतरें में होगा, स्वधर्म एवं देश का स्वाभिमान खतरे में होगा उस समय महाराणा प्रताप का त्याग बलिदान अमरज्योति का कार्य करेगी। उक्त बातें महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय जंगल धूसड़ में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वाधान में **महाराणा प्रताप की पुण्यतिथि** समारोह में बोलते हुए समारोह के मुख्य वक्ता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के मध्यकालीन इतिहास विभाग के अध्यक्ष एवं इतिहासकार प्रोफेसर हिमांशु चतुर्वेदी ने कही।

प्रोफेसर चतुर्वेदी ने कहा कि भारतीय इतिहास दर्शन में महाराणा प्रताप आत्मगौरव और राष्ट्रप्रेम के अप्रतीम उज्ज्वल प्रदीप्त की तरह विद्यमान है। यद्यपि कि मार्क्सवादी इतिहासकारों की सोच में भारतीय इतिहास से महाराणा प्रताप की गौरव गाथा को नदारत कर दिया है। आज जरूरत इस बात की है कि महाराणा प्रताप की अपराजेय यशस्वी कृति को पुनः स्थापित करकें भारत का मार्ग दर्शन करनें हेतु युवाओं को प्रेरित कर सके। महाराणा प्रताप का पूरा जीवन चरित्र भारतीय संस्कृति और सभ्यता को ताकत प्रदान करता रहा है। राष्ट्रीयता और राष्ट्रप्रेम को अक्षुण्ण रखने के लिए जरूरत है आज मानसिंह की प्रतीक तथाकथित सेकुलर राजनीति के मान–मर्दन के लिए महाराणा प्रताप जैसा नायक चाहिए। भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और राष्ट्रीय एकता–अखण्डता की आवश्यक शर्त है देश के गद्दार मानसिंह जैसे लोगों का सर्वनाश। ऐसे लोगों का सर्वनाश महाराणा प्रताप का जीवन दर्शन ही कर सकता है। शिक्षण संस्थाओं में महाराणा प्रताप के जीवन से प्रेरणा लेकर युवाओं में राष्ट्रवादी चरित्र का निर्माण किया जा सकता है। आज देश में सबसे बड़ा संकट कथनी और करनी में विभेद। हम भारत के महापुरूषों को आदर्श तो मानते हैं लेकिन उनके आदर्शो को जब अपने जीवन

(क्रमशः....2)

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

फोन नं0 : 0551–6827552, 2105416
मो. : 9794299451
Website: www.mpmahavidyalaya.org
E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : .....

दिनांक : 19.01.2016

में उतारने का अवसर होता है तो हम उससे भटक जाते है। आज समय की मांग है भारत का नौजवान ऐसे महापुरूषों के जीवन चरित्र से प्रेरणा लेकर अपने यशस्वी जीवन की रचना करे। आज के अवसर पर यही ऐसे महापुरूष को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

इस पुण्यतिथि समारोह की अध्यक्षता **डॉ. अविनाश प्रताप सिहं** ने करते हुए कहा कि आज भारत के नवयुवकों के सामने महाराणा प्रताप जैसे राष्ट्रनायक का जीवन पाठ्यक्रमों के माध्यम से प्रस्तुत न करने के कारण युवाओं में राष्ट्रभक्ति, स्वधर्म के प्रति आग्रह, देश समाज के लिए समर्पण के भाव का अभाव हुआ है। वर्तमान की भारत की शिक्षा नीति ने पाठ्यक्रमों में जिस प्रकार से भारत के लिए त्याग–बलिदान और शौर्य के प्रतीक महाराणा प्रताप और शिवाजी के जीवन मूल्यों को नकारा है यह देश का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है। आज जिस तरह से देश वाह्य एवं आन्तरिक दोनों प्रकार की चुनौतियों से जूझ रहा है, जिस तरह से आज नक्सलवाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद और आतंकवाद जैसे बड़े संकट से देश गुजर रहा है, उसका एक बड़ा कारण यही है कि हम युवकों को राष्ट्रीय प्रेम और राष्ट्रीय अस्मिता से सम्बन्धित शिक्षा देने में लगातार असफल हो रहे हैं। हमें प्रसन्नता है कि पूर्वी उत्तरप्रदेश में गोरक्षपीठ न महराणा प्रताप जैसे राष्ट्रनायक के नाम पर शिक्षण संस्थाओं की स्थापना कर युवकों में राष्ट्रीयता का भाव पैदा कर रहा है।

कार्यक्रम में प्रस्ताविकी प्रस्तुत करते हुए **डॉ0 यशवंत कुमार राव ने** कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा इस संस्था की स्थापना कर उसका संचालन किया जा रहा है, ताकि यहाँ पढ़ने वाले छात्र–छात्रा अपने निजी जीवन के साथ–साथ देश और समाज के प्रति भी अपनी जिम्मेदारी का जिम्मेदारी के साथ दायित्व–निर्वहन कर सकें।

कार्यक्रम में क्रीड़ा अधीक्षक डॉ0 मृत्युंजय कुमार सिहं एवं सुश्री दीप्ती गुप्ता ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किया।

इस अवसर पर मुख्य रूप से डॉ. विजय कुमार चौधरी, डॉ0 आर0एन0 सिहं, डॉ0 शिव कुमार बर्नवाल, सुबोध कुमार मिश्रा, डॉ. राजेश शुक्ला, श्रीमती कविता मन्ध्यान, डॉ. शक्ति सिंह, डॉ0 शुभ्रांशु शेखर सिंह, श्रीकान्त मणि त्रिपाठी, डॉ. महेन्द्र प्रताप सिहं, डॉ. राम सहाय, सहित सभी छात्र–छात्राओं एवं प्राध्यापकगण उपस्थित रहे।

(राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी